ISSN : 2583-2948

पाँच ग़ज़लें

डॉ. वेद मित्र शुक्ल
असोसिएट प्रोफ़ेसर, अंग्रेजी विभाग,
राजधानी महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय)
मो. : 9953458727, 9599798727
ईमेल : vedmitra.s@gmail.com

1

दामन नहीं भिगोया होगा,
पर, अंदर से रोया होगा।

पहुँचे आज बुलंदी पर जो,
सोचो क्या क्या खोया होगा।

आज नहीं तो कल फल होंगे,
एक बीज जो बोया होगा।

टूटी नहीं लड़ी जीवन की
सुख-दुख सभी पिरोया होगा।

तनहा होने का मतलब है,
यादें नहीं संजोया होगा।

2

होती है रफ्तार शहर में,
मिलना मुश्किल यार शहर में।

बाजारों में रौनक पसरी,
हैं उदास घर-बार शहर में।

जो सबके ही काम बनाए,
उन जैसे दो-चार शहर में।

गाँवों में चौपाल सजें औ-
मिलते हैं अखबार शहर में।

हर दिन ही इक सी बेचैनी,
मन ढूंढे इतवार शहर में।

भूले तुलसी-बरगद वाले-
सारे ही त्योहार शहर में।
मन की मन से कह-सुन लेते,
क्या करना इजहार शहर में।

ISSN : 2583-2948

3

चलते-चलते आँखों में कुछ सपने पलना अच्छा लगता,
पहियों से इस पटे शहर में पैदल चलना अच्छा लगता।

मत पूछो वह कौन, कहाँ से, दर्द अभी बस देखो समझो,
प्रश्न नहीं, जख्मों पर तो है मरहम लगना अच्छा लगता।

मुस्काते बच्चे इस जग की सच्ची दौलत होते यारा!
अपनी गति में मस्त रहें यों इनका बढ़ना अच्छा लगता।

दुनिया तो इक रंगमंच बस जबसे यह है जाना-माना,
सच कहता हूँ कठपुतली-सा अभिनय करना अच्छा लगता।

माना काम बहुत है लेकिन यों ही बैठे-लेटे रहकर,
घंटों तक मन की मन से ही कुछ भी कहना अच्छा लगता।

दुनिया में इक से बढ़कर इक नेक लोग मिलते रहते हैं,
लेकिन चाहे जैसा भी हो यदि है अपना अच्छा लगता।

जलता सूरज ऊपर है पर अरमानों की छाया ऐसी,
कैसे भी हो धीरे-धीरे, लेकिन बढ़ना अच्छा लगता।

4

मिट्टी, मौसम, आँखें नम हैं,
सबके अपने अपने गम हैं।

तिल रखने की जगह नहीं पर,
अच्छे लोग बहुत ही कम हैं।

आँखों में ख्वाहिशें हजारों,
हर पल जीते-मरते हम हैं।

उजियारे में भी अंधियारे,
कैसे-कैसे होते तम हैं।

काम पड़े तो पीछे हटते,
वैसे सब ही रखते दम हैं।

ISSN : 2583-2948

5

मन है भीग रहा बारिश में,
हो करके तनहा बारिश में।

पावस ऋतु की जलन न पूछो,
क्या-क्या नहीं सहा बारिश में।

यों हैं मेघ छुए धरती ने,
हर एक बूंद गहा बारिश में।

कागज की कश्ती सा होकर,
कितनी बार बहा बारिश में।

'आओ चलो घूम के आएं,'
उसने मुझे कहा बारिश में।

सावन की हरियाली छाई,
मौसम खिला नहा बारिश में।

उसका साथ मिला कुछ ऐसे,
तन मन आज दहा बारिश में।